श्रम निष्ठा अनोखा कुली

प्रदीप सिंह पंवार
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रुड़की।

एक बार ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को साक्षात्कार में विशेषज्ञ के नाते जाना था। जब वे स्टेशन पर उतरे वहां एक नवयुवक जो उसी स्थान पर नौकरी के साक्षात्कार के लिए आया था, स्टेशन पर खड़ा "कुली–कुली" पुकार रहा था। उसके पास एक छोटी सी अटैची थी। स्टेशन छोटा होने के कारण वहां कोई कुली नहीं था। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर धोती कुर्ता पहने उस युवक के पास आये और सामान्य भाव से उसकी अटैची उठाकर चल दिये, अब वह युवक आगे और ईश्वर चन्द्र विद्यासागर अटैची उठाकर पीछे–पीछे चल रहे थे।

स्टेशन से बाहर आकर नवयुवक ने ईश्वर चन्द्र विद्यासागर को आठ आने दिये। इस पर विद्यासागर ने मुस्कुराते हुए कहा, पैसे रख लो, मैं तो इधर आ ही रहा था। मैनें तो मनुष्य के नाते आपकी सहायता की है, मैं कुली नहीं हूं। नवयुवक ने अपने पैसे रख लिये और अपने गन्तव्य की ओर चल दिया। अगले दिन जब वह नवयुवक साक्षात्कार देने पहुंचा तो वह साक्षात्कार अधिकारी के रूप में बैठे व्यक्ति को देखकर चौंक गया। वह व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि वही व्यक्ति था, जिसने कल उसकी अटैची उठाई थी।

उस युवक की नजरें लज्जा से जमीन पर गड़ी जा रही थीं। ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने उसे देखकर केवल इतना ही कहा "नौजवान भविष्य में ध्यान रखना कि प्रत्येक मनुष्य को अपना काम स्वयं ही करना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरे के सहारे बैठा रहता है, वह कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।"

उस नवयुवक की आंखों में आंसू आ गये और विद्यासागर जी के चरण छुए और उनसे क्षमा मांगी। नवयुवक ने उनको वचन दिया कि वह उनकी दी गयी सीख को जीवनभर याद रखेगा और भविष्य में स्वावलम्बी बन अपने काम स्वयं ही करेगा और दूसरों की सहायता करेगा।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर निर्धनता में ही जन्में, पले और बढ़े थे। वे ज्ञान के सागर थे। उनमें स्वावलम्बन, निर्भयता और और परोपकार के गुण कूट–कूट कर भरे थे। वे उत्कृष्ट देश भक्त और स्वाभिमानी थे। आज भी उनका नाम सब आदर के साथ लेते हैं।

शिक्षा हमें हमेशा स्वावलम्बी, परोपकारी बनने के लिये निर्भयता का गुण और आत्मविश्वासी बनाती है।

हिंदी भारत की अमरवाणी है। यह स्वतंत्रता और सम्प्रभुता की गरिमा है।

माखनलाल चतुर्वेदी